GUNAHON KI NUHOOSAT

MA-A RAMAZAN ME GUNAH KARNE KI SAZAEN

(HINDI BAYAAN)

गुनाहों की नुहूसतें

(मअ़ रमजान में गुनाह करने की सज़ाएं)

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

نَوَيْتُ سُنَّتَ الاعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद आने पर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

तीन बद बख़्त

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है, ताजदारे मदीनए मुनव्वरा, सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "जिस ने माहे रमज़ान को पाया और इस के रोज़े न रखे वोह शख़्स शक़ी (या'नी बद बख़्त) है। जिस ने अपने वालिदैन या किसी एक को पाया और उन के साथ अच्छा सुलूक न किया वोह भी शक़ी (या'नी बद बख़्त) है और जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद न पढ़ा वोह भी शक़ी (या'नी बद बख़्त) है।" (مجمع الزوائد ج۳ص۳۴۰حدیث۴۷۷۳)

उन्हें किस के दुरूद की परवा
भेजे जब उन का किर्दगार दुरूद
है करम ही करम कि सुनते हैं
आप ख़ुश हो के बार बार दुरूद

(ज़ौक़े ना'त, स. 87)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ाति़र बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير لِلطّبرانی ج۶ ص۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा। ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ाति़र जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा। ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा। ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा। ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْبِ، اُذْكُرُوا اللّٰهَ، تُوْبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा। ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान करने की निय्यतें

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा। ۞ देख कर बयान करूंगा। ۞ पारह 14 सूरतुन्नह़्ल, आयत 125 : ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَ الْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (की ह़दीस 4361) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَ لَوْ اٰيَةً : "पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो" में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा। ۞ नेकी

www.dawateislami.net

का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा । ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इ़ल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा । ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा । ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा । ۞ नज़र की हिफ़ाज़त का ज़ेहन बनाने की ख़ातिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बयाने जन्नत निशान

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मह़बूबे रह़मान, सरवरे ज़ीशान, रह़मते आ़लमिय्यान, मक्की मदनी सुल्त़ान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने माहे शा'बान के आख़िरी दिन बयान फ़रमाया : "ऐ लोगो ! तुम्हारे पास अ़ज़मत वाला, बरकत वाला महीना आया, वोह महीना जिस में एक रात (ऐसी भी है जो) हज़ार महीनों से बेहतर है, इस (माहे मुबारक) के रोज़े, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़र्ज़ किये और इस की रात में क़ियाम तत़व्वोअ़ (या'नी सुन्नत) है, जो इस में नेकी का काम करे तो ऐसा है जैसे और किसी महीने में फ़र्ज़ अदा किया और इस में जिस ने फ़र्ज़ अदा किया तो ऐसा है जैसे और दिनों में सत्तर[70] फ़र्ज़ अदा किये । येह महीना सब्र का है और सब्र का सवाब जन्नत है और येह महीना मुआसात (या'नी ग़म ख़्वारी और भलाई) का है और इस महीने में मोमिन का रिज़्क़ बढ़ाया जाता है । जो इस में रोज़ा दार को इफ़्त़ार कराए, उस के गुनाहों के लिये मग़फ़िरत है और उस की गर्दन आग से आज़ाद कर दी जाएगी और उस इफ़्त़ार कराने वाले को वैसा ही सवाब मिलेगा जैसा रोज़ा रखने वाले को मिलेगा । बिग़ैर इस के कि उस के अज्र में कुछ कमी हो ।" हम ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम में से हर शख़्स वोह चीज़ नहीं पाता जिस से रोज़ा इफ़्त़ार करवाए । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला येह सवाब (तो)

www.dawateislami.net

उस (शख़्स) को देगा जो एक घूंट दूध या एक खजूर या एक घूंट पानी से रोज़ा इफ़्तार करवाए और जिस ने रोज़ादार को पेट भर कर खिलाया, उस को अल्लाह तआ़ला मेरे हौज़ से पिलाएगा कि कभी प्यासा न होगा। यहां तक कि जन्नत में दाख़िल हो जाए। येह वोह महीना है कि इस का अव्वल (या'नी इबतिदाई दस दिन) रह़मत है और इस का औसत़ (या'नी दरमियानी दस दिन) मग़फ़िरत है और आख़िर (या'नी आख़िरी दस दिन) जहन्नम से आज़ादी है। जो अपने गुलाम पर इस महीने में तख़्फ़ीफ़ करे (या'नी काम कम ले) अल्लाह तआ़ला उसे बख़्श देगा और जहन्नम से आज़ाद फ़रमा देगा, इस महीने में चार[4] बातों की कसरत करो। इन में से दो ऐसी हैं जिन के ज़रीए़ तुम अपने रब عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करोगे और बक़िय्या दो से तुम्हें बे नियाज़ी नहीं। पस वोह दो बातें जिन के ज़रीए़ तुम अपने रब عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करोगे वोह येह हैं : (1) لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ की गवाही देना (2) इस्तिग़फ़ार करना। जब कि वोह दो बातें जिन से तुम्हें ग़ना (या'नी बे नियाज़ी) नहीं वोह येह हैं : (1) अल्लाह तआ़ला से जन्नत त़लब करना (2) जहन्नम से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करना।'' (फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 857۱۸۸۷ (صحیح ابن خُزَیمہ، ج ۳، ص: ۱۹۱، حدیث:

अब्रे रह़मत छा गया है और समां है नूर नूर — फ़ज़्ले रब से मग़फ़िरत का हो गया सामान है
हर घड़ी रह़मत भरी है हर त़रफ़ हैं बरकतें — माहे रमज़ां रह़मतों और बरकतों की कान है

(वसाइले बख़्शिश, स. 705)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारी ख़ुश नसीबी कि एक बार फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमें रमज़ानुल मुबारक का महीना देखना नसीब फ़रमाया, इस माहे मुबारक की जलवा गरी तो क्या होती है, अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्लो करम से रह़मत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और ख़ूब मग़फ़िरत के परवाने तक़्सीम होते हैं, लिहाज़ा हमें इस की आमद पर ख़ूब ख़ुशी का इज़हार करना चाहिये और इस के इस्तिक़्बाल के लिये पहले से तय्यारी करनी चाहिये, अभी जो ह़दीसे पाक आप के सामने बयान की गई, इस से माहे रमज़ानुल मुबारक की रह़मतों, बरकतों और अ़ज़मतों का ख़ूब ख़ूब अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। जैसा कि आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि इस माहे मुबारक में नफ़्ली

www.dawateislami.net

इबादत का सवाब फ़र्ज़ के बराबर और फ़र्ज़ का सवाब सत्तर[70] फ़र्ज़ के बराबर कर दिया जाता है और इसी त़रह़ इस महीने में रोज़ा इफ़्त़ार करवाने वालों की मग़फ़िरत भी कर दी जाती है और मोमिन का रिज़्क़ भी बढ़ा दिया जाता है, इस के इलावा और बे शुमार रह़मतें और बरकतें इस मुबारक महीने में ह़ासिल होती हैं, लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि हम इस मुक़द्दस महीने में ख़ूब दिल खोल कर सदक़ा व ख़ैरात किया करें और ज़ियादा से ज़ियादा इबादात बजा लाएं, ख़ुसूसन कलिमा शरीफ़ ज़ियादा ता'दाद में पढ़ कर और बार बार इस्तिग़फ़ार या'नी ख़ूब तौबा के ज़रीए **अल्लाह** तआ़ला को राज़ी करने की सई करनी चाहिये । **अल्लाह** तआ़ला से जन्नत में दाख़िला और जहन्नम से पनाह की बहुत ज़ियादा इल्तिजाएं करनी चाहियें । काश ! हम गुनहगारों को ब तुफ़ैले माहे रमज़ान, सरवरे कौनो मकान, मक्की मदनी सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान, मह़बूबे रह़मान (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के रह़मत भरे हाथों से जहन्नम से रिहाई का परवाना मिल जाए । इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ करते हैं :

तमन्ना है फ़रमाइये रोज़े महशर
येह तेरी रिहाई की चिट्ठी मिली है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 188) (फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 867)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे अस्लाफ़े किराम (رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام) का येह मुबारक मा'मूल था कि जब रमज़ानुल मुबारक का प्यारा सा महीना तशरीफ़ लाता तो इस के इस्तिक़्बाल के लिये ख़ूब धूम धाम से तय्यारी करते और इस की आमद से ख़ुश हुवा करते थे, क्यूंकि येह वोह मुबारक महीना है कि इस के इस्तिक़्बाल की तय्यारी सिर्फ़ हम ही नहीं करते बल्कि रमज़ानुल मुबारक के इस्तिक़्बाल के लिये तो सारा साल जन्नत को भी सजाया जाता है । चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि ताजदारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक जन्नत इबतिदाई साल

www.dawateislami.net

से आयिन्दा साल तक रमज़ानुल मुबारक के लिये सजाई जाती है और फ़रमाया रमज़ान शरीफ़ के पहले दिन जन्नत के दरख़्तों के नीचे से बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरों पर हवा चलती है और वोह अ़र्ज़ करती हैं : ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों में से ऐसे बन्दों को हमारा शोहर बना जिन को देख कर हमारी आखें ठन्डी हों और जब वोह हमें देखें तो उन की आंखें भी ठन्डी हों ।''

(फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 864 شُعَبُ الایمان ج۳ص۳۱۲حدیث۳۶۳۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! माहे रमज़ान के फ़ैज़ान के तो क्या कहने ! इस की तो हर घड़ी रह़मत भरी है । लिहाज़ा हमें भी इस माहे मुबारक में नमाज़, रोज़ा, तिलावते क़ुरआने मजीद, ज़िक्रो अज़्कार और दीगर इबादात के लिये कमर बस्ता हो जाना चाहिये कि इस महीने में अज्रो सवाब बहुत ही बढ़ जाता है, चुनान्चे, इस ज़िम्न में एक और ईमान अफ़रोज़ ह़दीसे पाक सुनते हैं ताकि हमारे दिल में इस माहे मुक़द्दस की अहम्मिय्यत मज़ीद उजागर हो और येह भी मा'लूम हो कि इस महीने में इबादात व रियाज़ात पर किस क़दर इन्आ़मात व इकरामात की बारिश होती है । चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जब रमज़ान की पहली रात आती है तो आस्मानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और आख़िरी रात तक इन में से कोई दरवाज़ा बन्द नहीं किया जाता और जो बन्दा इस महीने की किसी रात में नमाज़ पढ़ता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये हर सजदे के इवज़ पन्दरह सो[1500] नेकियां लिखता है और उस के लिये जन्नत में सुर्ख़ याक़ूत का एक घर बना दिया जाता है जिस के साठ हज़ार[60,000] दरवाज़े होते हैं और हर दरवाज़े पर सोने की मुलम्मअ़ कारी होगी और उस पर सुर्ख़ याक़ूत जड़े होंगे, जब बन्दा रमज़ान के पहले दिन का रोज़ा रखता है तो उस के पिछले रमज़ान के पहले दिन के रोज़े तक के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं और उस के लिये रोज़ाना सत्तर हज़ार[70,000] फ़िरिश्ते फ़ज्र की नमाज़ से ग़ुरूबे आफ़्ताब तक इस्तिग़फ़ार करते हैं और उस रमज़ान के हर दिन

www.dawateislami.net

और हर रात में सजदा करने पर जन्नत में एक ऐसा दरख़्त अ़ता किया जाता है जिस के साये में कोई सुवार पांच सो[500] साल तक चलता रहे ।''

(شعب الایمان، فضائل شہر رمضان، باب فی الصیام، رقم ۳۶۳۵، ج ۳، ص ۳۱۴)

भाइयो ! बहनो ! गुनाहों से सभी तौबा करो
ख़ुल्द के दर खुल गए हैं दाख़िला आसान है

(वसाइले बख़्शिश, स. 706)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि माहे रमज़ानुल मुबारक की कैसी कैसी बरकतें हैं बल्कि येह महीना ख़ुद ही सरापा बरकत है कि रमज़ान की पहली रात आने पर आस्मानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और आख़िरी रात तक इन में से कोई दरवाज़ा बन्द नहीं किया जाता, तो जब पहली रात पर इस क़दर इन्आ़मात व इकरामात की नवीदें (या'नी ख़ुश ख़बरियां) हैं तो फिर पूरे महीने की रह़मतों, फ़ज़ीलतों और बरकतों का अन्दाज़ा कौन कर सकता है और चूंकि इस माह में शयात़ीन को क़ैद कर दिया जाता है इस लिये नेकियां करना और भी ज़ियादा आसान हो जाता है, लेकिन अगर फिर भी कोई नेकियां न करे और इबादत में सुस्ती करे तो येह बहुत ही ज़ियादा अफ़्सोस की बात है, इस लिये हमें चाहिये कि इस महीने की क़द्र करें, ख़ुद भी नेकियां करें और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं कि इस जैसा मुबारक महीना कोई और नहीं चुनान्चे, इस महीने के ह़वाले से शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **'फ़ैज़ाने रमज़ान'** में जो ख़ुसूसिय्यात बयान फ़रमाई हैं, आइये ! उन में से चन्द सुनते हैं, चुनान्चे,

महीनों में सिर्फ़ माहे रमज़ान का नाम क़ुरआन शरीफ़ में लिया गया । औ़रतों में सिर्फ़ बीबी मरयम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا का नाम क़ुरआन में आया । सह़ाबा में सिर्फ़ ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का नाम क़ुरआन में लिया गया, जिस से इन तीनों की अ़ज़मत मा'लूम हुई । रमज़ान शरीफ़ में

www.dawateislami.net

इफ़्तार और सहरी के वक़्त दुआ क़बूल होती है । या'नी इफ़्तार करते वक़्त और सहरी खा कर, येह मरतबा किसी और महीने को ह़ासिल नहीं ।

रमज़ान में 5 हुरूफ़ हैं (ر،م،ض،ا،ن) : ر से मुराद रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ, م से मुराद मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ, ض से मुराद ज़माने इलाही عَزَّوَجَلَّ, ا से अमाने इलाही عَزَّوَجَلَّ, ن से नूरे इलाही عَزَّوَجَلَّ । और रमज़ान में 5 इबादात ख़ुसूसी होती हैं । रोज़ा, तरावीह़, तिलावते क़ुरआन, ए'तिकाफ़, शबे क़द्र में इबादात । तो जो कोई सिद्क़ दिल से येह 5 इबादात करे, वोह इन 5 इन्आ़मों का मुस्तह़िक़ है ।" (तफ़्सीरे नईमी, जि. 2 स. 208, फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 863)

आ गया रमज़ां इबादत पर कमर अब बांध लो
फ़ैज़ ले लो जल्द येह दिन तीस का मेहमान है

(वसाइले बख़्शिश, स. 705)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ए'तिकाफ़ की तरग़ीब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रमज़ानुल मुबारक की बरकतों से कमा ह़क़्क़ुहू फ़ाइदा उठाने के लिये इस महीने में ए'तिकाफ़ कर लेना चाहिये कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने माहे रमज़ान का पूरा महीना भी ए'तिकाफ़ फ़रमाया है, ख़ास तौ़र पर आख़िरी 10 दिन का बहुत ज़ियादा एहतिमाम फ़रमाते । एक बार किसी ख़ास उ़ज़्र के तह़्त आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रमज़ानुल मुबारक में ए'तिकाफ़ न कर सके तो शव्वालुल मुकर्रम के आख़िरी अ़शरे में ए'तिकाफ़ फ़रमाया । (صحیح بخاری ج۱ ص ۲۷۱ حدیث ۲۰۳۱) इसी त़रह़ एक मरतबा सफ़र की वजह से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ए'तिकाफ़ रह गया तो अगले रमज़ान शरीफ़ में 20 दिन का ए'तिकाफ़ फ़रमाया । (جامع ترمذی ج۲ ص۲۱۲ حدیث۸۰۳) यूं तो ए'तिकाफ़ के बे शुमार फ़ज़ाइल हैं मगर उ़श्शाक़ के लिये तो इतनी ही बात काफ़ी है कि आख़िरी अ़शरे का ए'तिकाफ़ सुन्नत है । येह तसव्वुर ही ज़ौक़ अफ़्ज़ा है कि हमारे प्यारे सरकार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की एक प्यारी प्यारी सुन्नत अदा कर रहे हैं । ए'तिकाफ़ का एक बहुत बड़ा

www.dawateislami.net

फ़ाइदा येह भी है कि जितने दिन मुसलमान ए'तिकाफ़ में रहेगा, गुनाहों से बचा रहेगा और जो गुनाह वोह बाहर रह कर करता था, उन से महफ़ूज़ रहेगा। लेकिन येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ास रह़मत है कि बाहर रह कर जो नेकियां वोह किया करता था, ए'तिकाफ़ की ह़ालत में अगर्चे वोह उन को अन्जाम न दे सकेगा मगर फिर भी वोह उस के नामए आ'माल में ब दस्तूर लिखी जाती रहेंगी और उसे उन का सवाब भी मिलता रहेगा। जैसा कि

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : ए'तिकाफ़ करने वाला गुनाहों से बचा रहता है और उस के लिये तमाम नेकियां लिखी जाती हैं, जैसे उन के करने वाले के लिये होती हैं।" (ابن ماجہ ج۲ ص۳۶۵ حدیث۱۷۸۱) ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मो'तकिफ़ को हर रोज़ एक ह़ज का सवाब मिलता है। (شعب الایمان، ج۳، الحدیث ۳۹۶۸) ص۴۲۵، **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें भी रमज़ान शरीफ़ में ए'तिकाफ़ की बरकतें लूटने की सआ़दत अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ रमज़ानुल मुबारक में नेक आ'माल करना बहुत बड़ी सआ़दत है, इसी त़रह़ गुनाह करना भी बहुत बड़े ख़सारे का बाइस है, होना तो येह चाहिये कि इस माह में ख़ूब इबादत कर के रब عَزَّوَجَلَّ को राज़ी किया जाए, मगर अफ़्सोस बा'ज़ लोग ऐसे भी होते हैं, जो इस महीने में गुनाहों से बाज़ नहीं आते, न उन्हें नमाज़ों का ख़याल होता है न रोज़ों का पास होता है बल्कि इस मुक़द्दस माह में भी फ़िल्मों, डिरामों, झूट, ग़ीबत, चुग़ली और न जाने कैसे कैसे गुनाहों में मुब्तला रहते हैं, इसी त़रह़ रमज़ानुल मुबारक की पाकीज़ा रातों में कई नौजवान मह़ल्ले में क्रिकेट, फ़ुटबॉल वग़ैरा खेल खेलते, ख़ूब शोर मचाते हैं और इस त़रह़ येह लोग ख़ुद तो इबादत से मह़रूम रहते ही हैं, दूसरों के लिये भी परेशानी का बाइस बनते हैं। न तो ख़ुद इबादत करते हैं न दूसरों को करने देते हैं। इस क़िस्म के खेल

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की याद से ग़ाफ़िल करने वाले हैं। नेक लोग तो इन खेलों से सदा दूर ही रहते हैं। ख़ुद खेलना तो दर कनार ऐसे खेल तमाशे देखते भी नहीं बल्कि इस क़िस्म के खेलों का आंखों देखा ह़ाल (COMMENTARY) भी नहीं सुनते। लिहाज़ा इन ह़रकात से हमेशा बचना चाहिये और ख़ुसूसन रमज़ानुल मुबारक के बा बरकत लम्ह़ात तो हरगिज़ हरगिज़ इस त़रह़ बरबाद नहीं करने चाहिये। (फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 927)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रमज़ानुल मुबारक का तक़द्दुस पामाल करने वालों के मुतअ़ल्लिक़ कितनी सख़्त वईद वारिद हुई है, आइये सुनिये और इ़ब्रत से सर धुनिये। चुनान्चे,

रमज़ान में गुनाह करने वाला

ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे हानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है, दो जहां के सुल्त़ान, शहनशाहे कौनो मकान, सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "मेरी उम्मत ज़लीलो रुस्वा न होगी जब तक वोह माहे रमज़ान का ह़क़ अदा करती रहेगी।" अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रमज़ान के ह़क़ को ज़ाएअ़ करने में उन का ज़लीलो रुस्वा होना क्या है ? फ़रमाया : "इस माह में उन का ह़राम कामों का करना।" फिर फ़रमाया : जिस ने इस माह में बदकारी की या शराब पी तो अगले रमज़ान तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और जितने आस्मानी फ़िरिश्ते हैं सब उस पर ला'नत करते हैं। पस अगर येह शख़्स अगले माहे रमज़ान को पाने से पहले ही मर गया तो उस के पास कोई ऐसी नेकी न होगी जो उसे जहन्नम की आग से बचा सके। पस तुम माहे रमज़ान के मुआ़मले में डरो, क्यूंकि जिस त़रह़ इस माह में और महीनों के मुक़ाबले में नेकियां बढ़ा दी जाती हैं इसी त़रह़ गुनाहों का भी मुआ़मला है।" (المعجم الصغیر للطبرانی، ص:۲۴۷، فیضانِ سنت، ص:۹۱۹)

تُوبُوا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ना क़द्रो ! ख़बरदार !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि रमज़ानुल मुबारक का तक़द्दुस पामाल करने वालों को इस ह़दीसे पाक में किस क़दर झन्झोड़ा गया है, लिहाज़ा लरज़ उठिये और माहे रमज़ान की ना क़द्री से बचने का ख़ुसूसिय्यत के साथ सामान कीजिये । अगर हम ज़िल्लतो रुस्वाई से बचना चाहते हैं तो हमें रमज़ान का अदबो एह़तिराम बजा लाना होगा, इस माहे मुबारक में दूसरे महीनों के मुक़ाबले में जिस त़रह़ नेकियां बढ़ा दी जाती हैं, इसी त़रह़ दीगर महीनों के मुक़ाबले में गुनाहों की हलाकत ख़ैज़ियां भी बढ़ जाती हैं । माहे रमज़ान में शराब पीने वाला और बदकारी करने वाला तो ऐसा बद नसीब है कि आयिन्दा रमज़ान से पहले पहले मर गया तो अब उस के पास कोई नेकी ऐसी न होगी जो उसे जहन्नम की आग से बचा सके । याद रहे ! आंखों के लिये बद निगाही और अजनबिय्या (या शहवत के साथ अम्रद के) छूने को बदकारी कहा गया है, लिहाज़ा ख़बरदार ! ख़बरदार ! ख़बरदार ! माहे रमज़ान में बिल ख़ुसूस अपने आप को बद निगाही और अम्रद बीनी से बचाइये । ह़त्तल इमकान 'आंखों का क़ुफ़्ले मदीना' लगाइये या'नी निगाहें नीची रखने की भरपूर सई फ़रमाइये । आह ! सद हज़ार आह ! बसा अवक़ात नमाज़ी और रोज़ादार भी माहे रमज़ान की बे हुरमती कर के क़हरे क़ह्हार और ग़ज़बे जब्बार का शिकार हो कर अ़ज़ाबे नार में गिरिफ़्तार हो जाते हैं ।

दिल पर सियाह नुक़्त़ा

ह़दीसे मुबारक में आता है : "जब कोई इन्सान गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक सियाह नुक़्त़ा बन जाता है, जब दूसरी बार गुनाह करता है तो दूसरा सियाह नुक़्त़ा बनता है, यहां तक कि उस का दिल सियाह हो जाता है । नतीजतन भलाई की बात उस के दिल पर असर अन्दाज़ नहीं होती ।" (اَللُّؤْلُؤُ الْمَنْثُور ج۸ص۴۴۶) अब ज़ाहिर है कि जिस का दिल ही ज़ंग आलूद और सियाह हो चुका हो, उस पर भलाई की बात और नसीह़त कहां असर करेगी ? माहे रमज़ान हो या ग़ैरे रमज़ान ऐसे इन्सान का गुनाहों से बाज़ व बेज़ार रहना निहायत ही दुश्वार हो जाता है । उस का दिल नेकी की त़रफ़ माइल ही नहीं

www.dawateislami.net

होता । अगर वोह नेकी की त़रफ़ आ भी गया तो बसा अवक़ात उस का जी इसी सियाही के सबब नेकी में नहीं लगता और वोह सुन्नतों भरे मदनी माह़ोल से भागने ही की तदबीरें सोचता है । उस का नफ़्स उसे लम्बी उम्मीदें दिलाता, ग़फ़्लत उसे घेर लेती और वोह बद नसीब सुन्नतों भरे मदनी माह़ोल से दूर जा पड़ता है । माहे रमज़ान की मुबारक साअ़तें बल्कि बसा अवक़ात पूरी पूरी रातें ऐसा शख़्स, खेल कूद, गाने बाजे, ताश व शत़रंज, गप शप वग़ैरा में बरबाद करता है ।

गुनह लम्हा ब लम्हा हाए ! अब बढ़ते ही जाते हैं
नहीं पर इस पे हाए कुछ नदामत या रसूलल्लाह
गुनह कर कर के हाए ! हो गया दिल सख़्त पथ्थर से
करूं किस से कहां जा कर शिकायत या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 328)

दिल की सियाही का इलाज

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस सियाह क़ल्बी का इलाज ज़रूरी है और इस के इलाज का एक मुअस्सिर ज़रीआ़ पीरे कामिल भी है या'नी किसी ऐसे बुज़ुर्ग के हाथ में हाथ दे दिया जाए जो परहेज़गार और मुत्तबेए़ सुन्नत हो, जिस की ज़ियारत ख़ुदा व मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ व صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की याद दिलाए, जिस की बातें सलातो सुन्नत का शौक़ उभारने वाली हों, जिस की सोह़बत मौत व आख़िरत की तय्यारी का जज़्बा बढ़ाती हो । अगर ऐसा पीरे कामिल मुयस्सर आ जाए तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दिल की सियाही का ज़रूर इलाज हो जाएगा । (फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 920) और येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ास करम है ! कि वोह हर दौर में अपने प्यारे मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत की इस्लाह़ के लिये अपने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ज़रूर पैदा फ़रमाता है । जो अपनी मोमिनाना ह़िक्मत व फ़िरासत के ज़रीए़ लोगों को येह ज़ेह्न देने की कोशिश फ़रमाते हैं कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है ।"** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ी ज़माना मुर्शिदे कामिल

www.dawateislami.net

की एक मिसाल शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार, क़ादिरी, रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हैं जिन की निगाहे विलायत ने लाखों मुसलमानों बिल ख़ुसूस नौजवानों की ज़िन्दगियों में मदनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया । जो इस्लामी भाई किसी के मुरीद न हों उन की ख़िदमत में मश्वरतन अ़र्ज़ है ! कि अपनी दुन्या व आख़िरत की बेहतरी के लिये इस ज़माने के सिलसिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या रज़विय्या के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग और अ़ज़ीम इ़ल्मी व रूह़ानी शख़्सिय्यत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार, क़ादिरी, रज़वी, ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मुरीद हो जाएं । यक़ीनन मुरीद होने में नुक़्सान का कोई पहलू ही नहीं, दोनों जहां में اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ाइदा ही फ़ाइदा है । क्या ख़बर कि कब इन की एक नज़र हम पर पड़ जाए और हमारे ज़ाहिरो बात़िन के सब मेल और क़ल्बो फ़िक्र की तमाम सियाहियां धो डाले ।

याद रखिये ! किसी शख़्स को हमा वक़्त गुनाहों में मुब्तला रहता देख कर उस के बारे में हरगिज़ हरगिज़ येह कहने की इजाज़त नहीं होगी कि उस के दिल पर मोहर लग गई या उस का दिल सियाह हो गया, जभी नेकी की दा'वत उस पर असर नहीं करती । यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस बात पर क़ादिर है कि उसे तौबा की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा दे जिस से वोह राहे रास्त पर आ जाए । इस लिये किसी की टोह में पड़ने के बजाए अपने ज़ाहिरो बात़िन को संवारने की कोशिश की जाए । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारे दिल की सियाही को दूर फ़रमाए । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

उठे न आंख कभी भी गुनाह की जानिब
अ़त़ा करम से हो ऐसी मुझे ह़या या रब !
किसी की ख़ामियां देखें न मेरी आंखें और
सुनें न कान भी ऐबों का तज़किरा या रब !

(वसाइले बख़्शिश, स. 83)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रमज़ान में गुनाह करने के ह़वाले से एक इ़ब्रत अंगेज़ ह़िकायत सुनिये और ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ से लरज़िये ! ख़ास कर वोह लोग इस ह़िकायत से दर्से इ़ब्रत ह़ासिल करें जो रोज़ा रखने के बा वुजूद ताश, शत़रंज, लुडो, वीडियो गेम्ज़, फ़िल्में डिरामे, गाने बाजे वग़ैरा वग़ैरा बुराइयों से बाज़ नहीं रहते। चुनान्चे,

क़ब्र का भयानक मन्ज़र

मन्क़ूल है, एक बार अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ज़ियारते क़ुबूर के लिये कूफ़ा के क़ब्रिस्तान तशरीफ़ ले गए, वहां एक ताज़ा क़ब्र पर नज़र पड़ी। आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को उस के ह़ालात मा'लूम करने की ख़्वाहिश हुई। चुनान्चे, बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस मय्यित के ह़ालात मुझ पर मुन्कशिफ़ (या'नी ज़ाहिर) फ़रमा।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आप की इल्तिजा फ़ौरन मस्मूअ़ हुई (या'नी सुनी गई) और देखते ही देखते आप के और उस मुर्दे के दरमियान जितने पर्दे ह़ाइल थे तमाम उठा दिये गए। अब एक क़ब्र का भयानक मन्ज़र आप के सामने था। क्या देखते हैं कि मुर्दा आग की लपेट में है और रो रो कर आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से इस त़रह़ फ़रयाद कर रहा है : يَاعَلِيُّ! اَنَا غَرِيْقٌ فِى النَّارِ وَحَرِيْقٌ فِى النَّارِ या'नी या अ़ली ! كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم मैं आग में डुबा हुवा हूं और आग में जल रहा हूं। क़ब्र के दहशतनाक मन्ज़र और मुर्दे की दर्दनाक पुकार ने हैदरे कर्रार كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को बे क़रार कर दिया। आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अपने रह़मत वाले परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के दरबार में हाथ उठा दिये और निहायत ही आ़जिज़ी के साथ उस मय्यित की बख़्शिश के लिये दरख़्वास्त पेश की। ग़ैब से आवाज़ आई : "ऐ अ़ली (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) आप (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) इस की सिफ़ारिश न ही फ़रमाएं क्यूंकि रोज़े रखने के बा वुजूद येह शख़्स रमज़ानुल मुबारक की बे हुरमती करता, रमज़ानुल मुबारक में भी गुनाहों से बाज़ न आता था। दिन को रोज़े तो रख लेता मगर रातों को गुनाहों में मुब्तला रहता था। मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم येह सुन कर और भी रन्जीदा

www.dawateislami.net

हो गए और सजदे में गिर कर रो रो कर अ़र्ज़ करने लगे : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी लाज तेरे हाथ में है, इस बन्दे ने बड़ी उम्मीद के साथ मुझे पुकारा है, मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ तू मुझे इस के आगे रुस्वा न फ़रमा इस की बे बसी पर रह़्म फ़रमा दे और इस बेचारे को बख़्श दे। ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم रो रो कर मुनाजात कर रहे थे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत का दरया जोश में आ गया और निदा आई : ऐ अ़ली (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) हम ने तुम्हारी शिकस्ता दिली के सबब इसे बख़्श दिया। चुनान्चे, उस मुर्दे पर से अ़ज़ाब उठा लिया गया।" (फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 922, انیس الواعظین ص۲۵)

मग़फ़िरत करवाइये जन्नत में ले के जाइये
वासित़ा ह़सनैन का मौला अ़ली मुश्किल कुशा

(वसाइले बख़्शिश, स. 523)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत में हमारे लिये इ़ब्रत के बे शुमार मदनी फूल हैं। ज़िन्दा इन्सान ख़ूब फुदकता है मगर जब मौत का शिकार हो कर क़ब्र में उतार दिया जाता है, उस वक़्त आंखें बन्द होने के बजाए ह़क़ीक़त में खुल चुकी होती हैं। अच्छे आ'माल और राहे ख़ुदाए ज़ुल जलाल عَزَّوَجَلَّ में दिया हुवा माल तो काम आता है मगर जो कुछ धन दौलत पीछे छोड़ आता है उस में भलाई का इमकान न होने के बराबर होता है। वुरसा से येह उम्मीद कम ही होती है कि वोह अपने मर्ह़ूम अ़ज़ीज़ की आख़िरत की बेहतरी के लिये माले कसीर ख़र्च करें।

रोज़े में वक़्त 'पास' करने के लिये.....

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! काफ़ी नादान ऐसे भी देखे जाते हैं जो अगर्चे रोज़ा तो रख लेते हैं मगर फिर उन बे चारों का वक़्त 'पास' नहीं होता। लिहाज़ा वोह भी एह़तिरामे रमज़ान शरीफ़ को एक त़रफ़ रख कर ह़राम व ना जाइज़ कामों का सहारा ले कर वक़्त 'पास' करते हैं और यूं रमज़ान शरीफ़ में शत़रंज, ताश, लुड्डो, गाने बाजे, वग़ैरा में मश्ग़ूल हो जाते हैं। याद रखिये !

www.dawateislami.net

शत्‌रंज और ताश वग़ैरा पर किसी क़िस्म की बाज़ी या शर्त़ न भी लगाई जाए तब भी येह खेल ना जाइज़ हैं। बल्कि ताश में चूंकि जानदारों की तस्वीरें भी होती हैं, इस लिये मेरे आक़ा, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ताश खेलने को मुत़लक़न ह़राम लिखा है। चुनान्चे, फ़रमाते हैं : गन्जिफ़ा (पत्तों के ज़रीए़ खेले जाने वाले एक खेल का नाम और) ताश ह़रामे मुत़लक़ हैं कि इन में इ़लावा लह्वो लइ़ब के तस्वीरों की ता'ज़ीम है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 24 स. 141, फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 927) इसी त़रह़ शत़रंज खेलना भी ना जाइज़ है।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 16, स. 511)

किताब "फ़ैज़ाने रमज़ान" का तआ़रुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रमज़ानुल मुबारक के मुक़द्दस लम्ह़ात को फ़ुज़ूलिय्यात व ख़ुराफ़ात में बरबाद होने से बचाइये ! ज़िन्दगी बेह़द मुख़्तसर है इस को ग़नीमत जानिये, ताश की गड्डियों और फ़िल्मी गानों और त़रह़ त़रह़ के गुनाहों में वक़्त बरबाद करने के बजाए तिलावते क़ुरआन और ज़िक्रो दुरूद में वक़्त गुज़ारने की कोशिश फ़रमाइये और इस महीने की मुनासबत से शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की माया नाज़ तस्नीफ़ **'फ़ैज़ाने रमज़ान'** का मुत़ालआ़ भी बहुत मुफ़ीद है कि इस किताब में रमज़ानुल मुबारक के तक़रीबन तमाम अहम मसाइल मसलन नमाज़, रोज़ा, तरावीह़, ए'तिकाफ़ और ईदुल फ़ित्र से मुतअ़ल्लिक़ कसीर मा'लूमात के साथ साथ बे शुमार मदनी फूल भी अपनी ख़ुश्बूएं लुटा रहे हैं। आप भी इस किताब का मुत़ालआ़ करने की निय्यत फ़रमा लीजिये। उर्दू के इ़लावा भी दुन्या की मुख़्तलिफ़ ज़बानों में इस किताब का तर्जमा हो चुका है।

मजलिसे तराजिम का तआ़रुफ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सोच व फ़िक्र को सारी दुन्या में आ़म करने के लिये दा'वते इस्लामी का एक शो'बा **'मजलिसे तराजिम'** भी है जो अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه और मक्तबतुल मदीना की कुतुबो रसाइल का मुख़्तलिफ़ ज़बानों में तर्जमा करने की

ख़िदमत सर अन्जाम दे रहा है ताकि उर्दू पढ़ने वालों के साथ साथ दुन्या की दीगर ज़बानें बोलने वाले करोड़ों लोग भी फ़ैज़याब हो सकें और उन का भी येह मदनी ज़ेह्न बन जाए कि **मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ चुनान्चे, इन्तिहाई क़लील अ़र्से में अब तक इस मजलिस के तह़्त दुन्या की मुख़्तलिफ़ ज़बानों में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बहुत सी तसानीफ़ का तर्जमा हो चुका है।

हमें चाहिये कि मक्तबतुल मदीना की कुतुबो रसाइल का ख़ुद भी मुत़ालआ़ करें और अपने दोस्त, अह़बाब को भी पढ़ने की तरग़ीब दिलाएं, हो सके तो तोह़्फ़तन भी पेश करें। दुन्या के खेल तमाशों में वक़्त बरबाद करने के बजाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व ख़ुशनूदी पाने के लिये ज़ियादा से ज़ियादा नेक आ'माल करें। क्यूंकि हमें येह ज़िन्दगी खेल कूद और तफ़रीह़ के लिये नहीं बल्कि ऐसे काम करने के लिये दी गई है जिन की बजा आवरी से रिज़ाए रब्बुल अनाम ह़ासिल हो। चुनान्चे,

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : बेशक दुन्या मीठी और सर सब्ज़ है और **अल्लाह** तआ़ला इस (दुन्या) की तुम को ख़िलाफ़त देने वाला है पस देखता है कि तुम कैसे अ़मल करते हो। (ابن ماجہ،کتاب الفتن ،باب فتنۃ النساء،ج۴ص۳۵۷حدیث ۴۰۰۰)

पस याद रखिये ! मौत के बा'द हर शख़्स अपनी करनी का फल पाएगा, अगर दुन्या में अच्छे आ'माल किये होंगे तो इस की जज़ा पाएगा और अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता नफ़्सो शैत़ान के बहकावे में आ कर ज़िन्दगी गुनाहों में बसर की तो जहन्नम की सज़ा का मुस्तह़िक़ ठहरेगा। जैसा कि पारह 30 सूरतुज़्ज़िलज़ाल की आयत नम्बर 7 और 8 में इरशाद होता है :

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۝ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देखेगा।*

यक़ीनन अ़क़्लमन्द वोही है जिस के दिलो दिमाग़ में गुनाहों की तबाह कारियां रासिख़ हों और वोह ख़ुद को न सिर्फ़ इन से बचाए बल्कि नेकियां कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करे, मगर अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! दीन

www.dawateislami.net

से दूरी और इस्लामी मा'लूमात की कमी का नतीजा हमारे सामने है कि चहार जानिब गुनाहों का बाज़ार गर्म है, जिस त़रफ़ नज़र उठाइये बे अ़मली व बे राह रवी का दौर दौरा है, ह़ालांकि अह़कामे ख़ुदावन्दी से मुंह मोड़ने का नतीजा सिवाए तबाही व बरबादी के कुछ नहीं है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकी या गुनाह के दोनों रास्ते हमारे सामने हैं, अब फ़ैसला हम ने ख़ुद ही करना है कि हम क्या चाहते हैं ? फ़रमां बरदारी के रास्ते पर चलते हुवे रह़मान عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशी मत़लूब है या गुनाहों के दलदल में धंस कर उस की नाराज़ी चाहते हैं ? याद रखिये ! नेकी के रास्ते पर चलेंगे तो रिज़ाए रब्बुल अनाम के साथ साथ बे शुमार बरकतों से भी नवाज़े जाएंगे और अगर गुनाह व ना फ़रमानी के रास्ते को अपनाऐंगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत का त़ौक़ मुक़द्दर बन सकता है। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना वहब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बनी इस्राईल से फ़रमाया : बन्दा जब मेरी इत़ाअ़त करता है तो मैं उस से राज़ी हो जाता हूं और जब मैं उस से राज़ी हो जाता हूं तो उसे बरकतें अ़त़ा फ़रमाता हूं। (बा'ज़ रिवायतों में है कि मेरी बरकत की कोई इन्तिहा नहीं) और जब बन्दा मेरी नाफ़रमानी करता है तो मैं उस से नाराज़ हो जाता हूं और जब मैं उस से नाराज़ हो जाता हूं तो उस पर ला'नत फ़रमाता हूं और मेरी ला'नत उस की सात पुश्तों तक पहुंचती है। (الزواجر عن اقتراف الکبائر، مقدمۃ فی تعریف الکبیرۃ، خاتمۃ فی التحذیر۔۔۔الخ، ج۱ص۲۸)

اَلْاَمَان وَالْحَفِیْظ हम इस बात से पनाह मांगते हैं कि हमारा शुमार उन लोगों में हो जिन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ला'नत फ़रमाई है।

तू बस रहना सदा राज़ी नहीं है ताबे नाराज़ी
तू ना ख़ुश जिस से हो बरबाद है तेरी क़सम मौला

(वसाइले बख़्शिश, स. 98)

बनी इस्राईल पर मुख़्तलिफ़ अ़ज़ाबों का सबब !

मरवी है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की गई : क्या बनी इस्राईल ने अपना दीन छोड़ दिया था जिस की वजह से उन्हें मुख़्तलिफ़ क़िस्म के दर्दनाक अ़ज़ाबों में मुब्तला किया गया मसलन उन की सूरतें बिगाड़ कर उन्हें बन्दर व ख़िन्ज़ीर बना दिया गया और अपने आप को

www.dawateislami.net

क़त्ल करने का हुक्म दिया गया ? तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : नहीं ! बल्कि जब उन्हें किसी चीज़ का हुक्म दिया जाता तो वोह उसे छोड़ देते और जब किसी काम से रोका जाता तो (अन्जाम की परवा किये बिग़ैर) उसे कर गुज़रते यहां तक कि वोह अपने दीन से इस त़रह़ निकल गए जैसे आदमी अपनी क़मीस से निकल जाता है।

(الزواجر عن اقتراف الکبائر، مقدمۃ فی تعریف الکبیرۃ، خاتمۃ فی التحذیر۔۔الخ، ج۱ص۲۶)

मा'लूम हुवा ! गुनाहों के सबब ईमान बरबाद हो सकता है और यक़ीनन एक मुसलमान के लिये ईमान के छिन जाने से बड़ी कोई बरबादी हो ही नहीं सकती, लिहाज़ा फ़ौरन गुनाहों से तौबा कर के क़ुरआनो सुन्नत के अह़कामात पर अ़मल को अपना मा'मूल बना लीजिये । ज़रा सोचिये तो सही ! अगर यूंही गुनाह करते करते क़ब्र में उतर गए और हम पर अ़ज़ाब मुसल्लत़ कर दिया गया तो हम क्या करेंगे ? अगर सांप बिच्छूओं ने कफ़न फाड़ कर हमारे जिस्म पर क़ब्ज़ा जमा लिया तो कहां जाएंगे ? क़ब्र की दीवारें मिलने से हमारी पस्लियां टूट फूट कर एक दूसरे में पैवस्त हो गईं तो कैसी शदीद तक्लीफ़ होगी ? एक पथ्थर की चोट तो बरदाश्त होती नहीं, अगर फ़िरिश्तों ने हथोड़े बरसाने शुरूअ़ कर दिये तो इन नाज़ुक हड्डियों का क्या बनेगा ? गुनाहों के सबब रब عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी की सूरत में होने वाले इन अ़ज़ाबात को ज़रा तसव्वुर में तो लाइये...और फिर फ़ैसला कीजिये कि हमारा गुनाहों से बचना आसान है या इन अ़ज़ाबात को सहना..! यक़ीनन हम में से कोई भी इन अ़ज़ाबों की ताब नहीं रखता तो आइये ! अभी वक़्त है तौबा कर लीजिये ख़ुद को गुनाहों से बचाते हुवे रब عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त और फ़रमां बरदारी में अय्यामे ज़ीस्त (या'नी ज़िन्दगी के अय्याम) बसर कीजिये कि इसी में कामयाबी है।

गुनाहों से मुझे हो जाए नफ़रत या रसूलल्लाह
निकल जाए बुरी हर एक ख़स्लत या रसूलल्लाह
कमर आ'माले बद ने हाए मेरी तोड़ कर रख दी
तबाही से बचा लो जाने रहमत या रसूलल्लाह

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

गुनाहों के दस[10] नुक़्सान

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन गुनाहों से कभी भी कोई फ़ाइदा ह़ासिल नहीं हो सकता बल्कि इस में नुक़्सान ही नुक़्सान है और गुनाहों में किस क़दर नुहूसत है इस की तबाही व बरबादी का अन्दाज़ा इस बात से लगाइये । चुनान्चे,

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान से हरगिज़ धोके में न पड़ना :

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ وَ مَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزٰۤى اِلَّا مِثْلَهَا

(پ۸، الانعام: ۱۶۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जो एक नेकी लाए तो उस के लिये इस जैसी दस हैं और जो बुराई लाए तो उसे बदला न मिलेगा मगर उस के बराबर ।*

क्यूंकि गुनाह अगर्चे एक ही हो अपने साथ दस[10] बुरी ख़स्लतें ले कर आता है : (1) जब बन्दा गुनाह करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ग़ज़ब दिलाता है और वोह उसे पूरा करने पर क़ुदरत रखता है (2) वोह (या'नी गुनाह करने वाला) इब्लीस मलऊ़न को ख़ुश करता है (3) जन्नत से दूर हो जाता है (4) जहन्नम के क़रीब आ जाता है (5) वोह अपनी सब से प्यारी चीज़ या'नी अपनी जान को तक्लीफ़ देता है (6) वोह अपने बातिन को नापाक कर बैठता है ह़ालांकि वोह पाक होता है (7) आ'माल लिखने वाले फ़िरिश्तों या'नी किरामन कातिबीन को ईज़ा देता है (8) वोह नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को रौज़ए मुबारका में रन्जीदा कर देता है । (9) ज़मीनो आस्मान और तमाम मख़्लूक़ को अपनी ना फ़रमानी पर गवाह बना लेता है । (10) वोह तमाम इन्सानों से ख़ियानत और रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करता है ।

(بحر الدموع، الفصل الثانی عواقب المعصیة، ص: ۳۰)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों से आख़िरत का नुक़्सान और अ़ज़ाबे जहन्नम की सज़ाओं और क़ब्र में क़िस्म क़िस्म के अ़ज़ाबों में मुब्तला होना तो हर शख़्स जानता है मगर याद रखिये ! गुनाहों की नुहूसत से आदमी को दुन्या में भी त़रह़ त़रह़ के नुक़्सानात पहुंचते रहते हैं, जिन में से चन्द येह हैं : (1) रोज़ी कम हो जाना (2) बलाओं का हुजूम (3) उ़म्र घट जाना (4) दिल में और बा'ज़ मरतबा तमाम बदन में अचानक कमज़ोरी पैदा हो कर सिह़्ह़त ख़राब हो जाना (5) इबादतों से मह़रूम हो जाना (6) अ़क़्ल में फ़ुतूर पैदा हो जाना (7) लोगों की नज़रों में ज़लीलो ख़्वार हो जाना (8) खेतों और बाग़ों की पैदावार में कमी हो जाना (9) ने'मतों का छिन जाना (10) हर वक़्त दिल का परेशान रहना (11) अचानक ला इलाज बीमारियों में मुब्तला हो जाना (12) **अल्लाह** तआ़ला, उस के फ़िरिश्तों, नबियों और नेक बन्दों की ला'नतों में गिरिफ़्तार हो जाना (13) चेहरे से ईमान का नूर निकल जाने से चेहरे का बे रौनक़ हो जाना (14) शर्म व ग़ैरत का जाते रहना (15) हर त़रफ़ से ज़िल्लतों, रुस्वाइयों और नाकामियों का हुजूम हो जाना वग़ैरा वग़ैरा गुनाहों की नुहूसत से बड़े बड़े दुन्यावी नुक़्सान हुवा करते हैं। (जन्नती ज़ेवर, स. 143)

गुनाहों की नुहूसत बढ़ रही है दम ब दम मौला !
मैं तौबा पर नहीं रह पा रहा साबित क़दम मौला !

गुनाहों ने मुझे हाए ! कहीं का भी नहीं छोड़ा
करम हो अज़ तुफ़ैले सय्यिदे अ़रबो अ़जम मौला !

(वसाइले बख़्शिश, स. 97)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये अब मुख़्तसरन चन्द गुनाह और इन की नुहूसतें और हलाकत ख़ैज़ियां सुनिये और इन से बचने का अ़ज़्मे मुसम्मम कीजिये। चुनान्चे, इन में से एक **झूट** है। येह वोह गन्दी आ़दत है कि दीनो दुन्या में झूटे का कहीं कोई ठिकाना नहीं। झूटा आदमी हर जगह ज़लीलो ख़्वार होता है और हर मजलिस और हर इन्सान के सामने बे वक़ार और बे ए'तिबार हो जाता है, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बन्दा

www.dawateislami.net

कामिल मोमिन नहीं होता जब तक मज़ाक़ में भी झूट बोलना और झगड़ा करना न छोड़े, अगर्चे सच्चा हो। (المسند "للإمام أحمد بن حنبل، مسند أبي بريرة، الحديث: ٨٦٣٨، ج٣، ص٢٦٨) इसी त़रह़ **ग़ीबत** की नुहूसत में से है कि येह बुरे ख़ातिमे का सबब है, ब कसरत ग़ीबत करने वाले की दुआ़ क़बूल नहीं होती, ग़ीबत से नमाज़ रोज़े की नूरानिय्यत चली जाती है, ग़ीबत की नुहूसत का अन्दाज़ा इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से भी लगाया जा सकता है : اَلْغِيْبَةُ اَشَدُّ مِنَ الزِّنَا या'नी ग़ीबत बदकारी से बड़ा गुनाह है। (الترغيب والترهيب، ج٣، ص٣٣١، حديث:٢٤) इसी त़रह़ **चुग़ली** के सबब भी घरों की बरबादी, आपस में रन्जिशें और बुग़्ज़ो कीना परवरिश पाता है नीज़ ऐसे शख़्स को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी पसन्द नहीं फ़रमाता, ह़दीसे पाक में आता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे वोह हैं जिन्हें देखें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ याद आ जाए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बुरे बन्दे वोह हैं जो चुग़ल ख़ोरी करते, दोस्तों में जुदाई डालते और नेक लोगों के ऐब तलाश करते हैं। (مسند احمد، ٦/ ٢٩١، حديث ١٨٠٢٠) चुग़ली की त़रह़ **गाली गलोच** से भी फ़ितना व फ़साद जनम लेते मसलन आपस में नफ़रतें जनम लेती हैं, ख़ून रेज़ियां, लड़ाइयां और बहुत सी तबाहकारियां रूनुमा होती हैं। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मुसलमान को गाली देना ख़ुद को हलाकत में डालने के मुतरादिफ़ है।" (الترغيب والترهيب، كتاب الادب ،، ج٣، ص٣٧٧، الحديث:٤٣٦٣) इसी त़रह़ **ह़सद** भी निहायत बुरी ख़स्लत और गुनाहे अ़ज़ीम है ह़ासिद की सारी ज़िन्दगी जलन और घुटन की आग में जलती रहती है और उसे चैनो सुकून नसीब नहीं होता, ह़सद नेकियों को इस त़रह़ खा जाता है जैसे आग लकड़ी को। यूंही तकब्बुर को देखा जाए तो इस के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी, मख़्लूक़ की बेज़ारी, मैदाने महशर में ज़िल्लतों रुस्वाई, रब की रह़मत और इन्आ़माते जन्नत से महरूमी और जहन्नम का ह़क़दार बनने जैसे बड़े बड़े नुक़्सानात का सामना हो सकता है। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस के दिल में राई के दाने जितना भी तकब्बुर होगा वोह जन्नत में दाख़िल न होगा।"

(صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب تحريم الكبر وبيانه، الحديث: ١٤٧، ص٦٠)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने येह गुनाह मुआ़शरे में कैसी कैसी बुराइयों को जनम देते हैं। लिहाज़ा गुनाह ख़्वाह छोटा हो या बड़ा इस से बचने ही में आ़फ़िय्यत है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : गुनाह के छोटा होने को न देखो बल्कि येह देखो कि तुम किस की ना फ़रमानी कर रहे हो ! (الزواجر عن اقتراف الکبائر، مقدمة فی تعریف الکبیرة، خاتمة فی التحذیر۔۔الخ، ۱/۲۷) लिहाज़ा अगर गुनाह का इरादा करते वक़्त हमारी येह मदनी सोच बन जाए कि मैं जिस रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी कर रहा हूं वोह तो मुझे हर वक़्त हर ह़ाल में देख रहा है तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस त़रह़ काफ़ी ह़द तक गुनाहों से छुटकारा नसीब हो जाएगा। गुनाहों से नफ़रत करने और छुटकारा पाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ किसी अच्छे माह़ोल से वाबस्ता होना भी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आज के इस पुर फ़ितन दौर में दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़ीम ने'मत है। आप भी इस महके महके मुश्कबार मदनी माह़ोल से हरदम वाबस्ता रहिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत की भलाइयां ह़ासिल होंगी।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज के बयान में हम ने रमज़ानुल मुबारक की बहारें, रमज़ान में गुनाह करने की सज़ाओं और गुनाहों की नुहूसतों के मुतअ़ल्लिक़ सुना कि रमज़ानुल मुबारक में गुनाह करने वाले और इस का तक़द्दुस पामाल करने वालों को ह़दीस में ज़लीलो रुस्वा होने की वईद सुनाई गई है नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि गुनाहों की नुहूसत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी और दुन्या व आख़िरत की बरबादी इन्सान का मुक़द्दर हो जाती है। लिहाज़ा हमें चाहिये कि गुनाहों से बचते हुवे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करने वाले कामों में मश्ग़ूल हो जाएं ताकि दुन्या व आख़िरत की अबदी व सरमदी ने'मतों से मुस्तफ़ीज़ हो सकें।

www.dawateislami.net

12 मदनी कामों में हिस्सा लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकियां करने और गुनाहों से बचने का एक ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो कर ज़ैली हल्क़े के 12 मदनी कामों में मसरूफ़ हो जाना भी है।

ए'तिकाफ़ की तरग़ीब

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ माहे रमज़ानुल मुबारक की बरकतों के तो क्या कहने कि इस माह में इबादत करने और नेकियों में इज़ाफ़ा करने के मवाक़ेअ़ बहुत बढ़ जाते हैं। चुनान्चे, इस माह में नेकियां बढ़ाने और ख़ुद को गुनाहों से बचाने और ख़ूब ख़ूब इल्मे दीन हासिल करने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ पूरे माहे रमज़ान या आख़िरी अ़शरे का ए'तिकाफ़ भी है और ए'तिकाफ़ की फ़ज़ीलत का अन्दाज़ा इस ह़दीसे पाक से लगाइये कि उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि सरकारे अबद क़रार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुशबूदार है : مَنِ اعْتَکَفَ اِیْمَانًا وَّاحْتِسَابًا غُفِرَلَہ مَاتَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِہٖ या'नी जिस शख़्स ने ईमान के साथ सवाब ह़ासिल करने की निय्यत से ए'तिकाफ़ किया, उस के पिछले तमाम गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।'' (جامع صغیر ص ۵۱۶ الحدیث ۸۴۸۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हो सके तो हर साल वरना ज़िन्दगी में कम अज़ कम एक बार तो पूरे माहे रमज़ानुल मुबारक का ए'तिकाफ़ कर ही लेना चाहिये। हमारे प्यारे प्यारे और रह़मत वाले आक़ा, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये हर वक़्त कमर बस्ता रहते थे और ख़ुसूसन रमज़ान शरीफ़ में इबादत का ख़ूब ही एहतिमाम फ़रमाया करते। चूंकि माहे रमज़ान ही में शबे क़द्र को भी पोशीदा रखा गया है, लिहाज़ा इस मुबारक रात को तलाश करने के लिये आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक बार पूरे माहे मुबारक का ए'तिकाफ़ फ़रमाया। और यूं भी मस्जिद में पड़ा रहना

www.dawateislami.net

बहुत बड़ी सआ़दत है और मो'तकिफ़ की तो क्या बात है कि रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पाने के लिये अपने आप को तमाम मशाग़िल से फ़ारिग़ कर के मस्जिद में डेरे डाल देता है । फ़तावा आ़लमगीरी में है : ''ए'तिकाफ़ की ख़ूबियां बिल्कुल ही ज़ाहिर हैं क्यूंकि इस में बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये कुल्लिय्यतन (या'नी मुकम्मल त़ौर पर) अपने आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत में मुन्हमिक कर देता है और इन तमाम मशाग़िले दुन्या से किनारा कश हो जाता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़ुर्ब की राह में ह़ाइल होते हैं और मो'तकिफ़ के तमाम अवक़ात ह़क़ीक़तन या ह़ुक्मन नमाज़ में गुज़रते हैं । (क्यूंकि नमाज़ का इन्तिज़ार करना भी नमाज़ की त़रह़ सवाब रखता है) और ए'तिकाफ़ का मक़्सूदे अस्ली जमाअ़त के साथ नमाज़ का इन्तिज़ार करना है और मो'तकिफ़ उन (फ़िरिश्तों) से मुशाबहत रखता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़ुक्म की ना फ़रमानी नहीं करते और जो कुछ उन्हें ह़ुक्म मिलता है उसे बजा लाते हैं, और उन के साथ मुशाबहत रखता है जो शबो रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ (पाकी) बयान करते रहते हैं और इस से उक्ताते नहीं ।'' (فتاوی عالمگیری ج۱ص۲۱۲)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने दौराने ए'तिकाफ़ किस क़दर नेकियां करने के मवाक़ेअ़ मिलते हैं । हमें भी हर साल न सही कम अज़ कम ज़िन्दगी में एक बार इस अदाए मुस्त़फ़ा को अदा करते हुवे पूरे माहे रमज़ानुल मुबारक का ए'तिकाफ़ कर ही लेना चाहिये और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलानी चाहिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के तह़्त दुन्या भर में पूरे माहे रमज़ान और आख़िरी अ़शरे के सुन्नते ए'तिकाफ़ की तरकीब होगी, पाकिस्तान में इस साल पूरे माह के ए'तिकाफ़ के लिये 126 मक़ामात का हदफ़ है और आख़िरी अ़शरे के ए'तिकाफ़ के लिये 4000 मक़ामात का हदफ़ है, सब से बड़ा ए'तिकाफ़ आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना (कराची) में होगा, जिस में اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه भी मो'तकिफ़ होंगे ।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हर त़रफ़ ए'तिकाफ़ की बहारें हैं, आप भी हिम्मत कीजिये, अगर वालिदैन, अहलो इ़याल वग़ैरा की ह़क़ तलफ़ी नहीं होती तो पूरे माहे मुबारक का ए'तिकाफ़ फ़रमा लीजिये, वोह इ़ल्मे दीन का ख़ज़ाना आप के हाथ आएगा कि आप ह़ैरान रह जाऐंगे, اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ माहे रमज़ान के ए'तिकाफ़ में दुरुस्त मख़ारिज के साथ क़ुरआन पढ़ना सिखाया जाता है, प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मक़्बूल दुआएं, नमाज़ की शराइत़ व फ़राइज़ और मुफ़्सिदात वग़ैरा भी सिखाए जाते हैं, मरह़बा ! ज़ोहर के बा'द और बा'दे तरावीह़ इ़ल्मे दीन के रंग बि रंगे महके महके मदनी फूल अ़त़ा होते हैं, अमीरे अहले सुन्नत की जानिब से मदनी मुज़ाकरों की सूरत में, **अल्लाह अल्लाह** रोज़ाना मुनाजाते इफ़्त़ार में आ़शिक़ाने रसूल, आ़शिक़ाने रमज़ान की पुरसोज़ और रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ओं में शुमूलिय्यत का मौक़अ़ भी मिलता है, अगर पूरा ही रमज़ान मस्जिद में गुज़ारें तो क्या ही बात है, अगर ऐसा नहीं कर सकते तो कम अज़ कम आख़िरी अ़शरए रमज़ान की तरकीब तो बना ही लीजिये ।

रह़मते ह़क़ से दामन तुम आ कर भरो
मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
सुन्नतें सीखने के लिये आओ तुम
मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ए'तिकाफ़ की बरकत से सारा ख़ानदान मुसलमान हो गया

एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि कल्यान (महाराष्ट्र, अल हिन्द) की मैमन मस्जिद में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी की जानिब से रमज़ानुल मुबारक (सिने 1426 हिजरी, 2005 ईसवी) में होने वाले इजतिमाई ए'तिकाफ़ में एक नौ मुस्लिम ने (जो कि कुछ अ़र्से क़ब्ल एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी के हाथों मुसलमान हुवे थे) ए'तिकाफ़ की सआ़दत ह़ासिल की । सुन्नतों भरे बयानात,

www.dawateislami.net

केसीट इजतिमाआ़त और सुन्नतों भरे ह़ल्क़ों ने उन पर ख़ूब मदनी रंग चढ़ाया ए'तिकाफ़ की बरकत से दीन की तब्लीग़ के अ़ज़ीम जज़्बे का रोशन चराग़ उन के हाथों में आ गया चूंकि उन के घर के दीगर अफ़राद अभी तक कुफ़्र की अन्धेरी वादियों में भटक रहे थे चुनान्चे, ए'तिकाफ़ से फ़ारिग़ होते ही उन्हों ने अपने घर वालों पर कोशिश शुरूअ़ कर दी, दा'वते इस्लामी के मुबल्लिग़ीन को अपने घर बुलवा कर **दा'वते इस्लाम** पेश करवाई। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वालिदैन, दो बहनों और एक भाई पर मुश्तमिल सारा ख़ानदान मुसलमान हो कर सिलसिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या रज़विय्या में दाख़िल हो कर हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का मुरीद हो गया।

वलवला दीं की तब्लीग़ का पाओगे, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
फ़ज़्ले रब से ज़माने पे छा जाओगे, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(फ़ैज़ाने रमज़ान, स. 1470)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۹۷، حدیث: ۱۷۵)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले **'101 मदनी फूल'** से जूते पहनने के 7 मदनी फूल सुनते हैं :

www.dawateislami.net

"चल मदीना" के सात हुरूफ़ की निस्बत से जूते पहनने के 7 मदनी फूल

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** ﴿1﴾ जूते ब कसरत इस्ति'माल करो कि आदमी जब तक जूते पहने होता है गोया वोह सुवार होता है। (या'नी कम थकता है) (مُسلِم ص ۱۱۶۱ حدیث ۲۰۹۶) ﴿2﴾ जूते पहनने से पहले झाड़ लीजिये ताकि कीड़ा या कंकर वग़ैरा हो तो निकल जाए। ﴿3﴾ पहले सीधा जूता पहनिये फिर उलटा और उतारते वक़्त पहले उलटा जूता उतारिये फिर सीधा। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जब तुम में से कोई जूते पहने तो दाईं (या'नी सीधी) जानिब से इब्तिदा करनी चाहिये और जब उतारे तो बाईं (या'नी उल्टी) जानिब से इब्तिदा करनी चाहिये ताकि दायां (या'नी सीधा) पाऊं पहनने में अव्वल और उतारने में आख़िरी रहे। (بُخاری ج ۴ ص ۶۵ حدیث ۵۸۵۵) ﴿4﴾ मर्द मर्दाना और औ़रत ज़नाना जूता इस्ति'माल करे। ﴿5﴾ किसी ने ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से कहा कि एक औ़रत (मर्दों की त़रह़) जूते पहनती है। उन्हों ने फ़रमाया **:** रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मर्दानी औ़रतों पर ला'नत फ़रमाई है। (اَبُو دَاوٗد، ج ۴ ص ۸۴ حدیث ۴۰۹۹) ﴿6﴾ जब बैठें तो जूते उतार लीजिये कि इस से क़दम आराम पाते हैं। ﴿7﴾ (तंगदस्ती का एक सबब येह भी है कि) औंधे जूते को देखना और उस को सीधा न करना '**दौलते बे ज़वाल**' में लिखा है कि अगर रात भर जूता औंधा पड़ा रहा तो शैत़ान उस पर आन कर बैठता है वोह उस का तख़्त है। (सुन्नी बहिश्ती ज़ेवर, ह़िस्सा 5 स. 201)

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16 (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब '**सुन्नतें और आदाब**' हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तर्बिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 7 दुरूदे पाक और 1 दुआ़

﴾1﴿ शबे जुमुआ़ का दुरूद :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِى الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा तो मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे **क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं ।** (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات ص ١٥١ ملخصًا)

﴾2﴿ तमाम गुनाह मुआ़फ़ :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े, अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के **गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे ।** (اَیضاً ص ٦٥)

﴾3﴿ रह़मत के सत्तर दरवाज़े : صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर **रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं ।** (اَلْقَوْلُ الْبَدِيْع ص ٢٧٧)

﴾4﴿ एक हज़ार दिन की नेकियां :

جَزَى اللّٰهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا هُوَ اَهْلُهٗ

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस दुरूदे पाक को पढ़ने वाले के लिये **सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं ।** (مَجْمَعُ الزَّوَائِد)

www.dawateislami.net

﴾5﴿ छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِیْ عِلْمِ اللّٰہِ صَلَاۃً دَآئِمَۃً بِدَوَامِ مُلْکِ اللّٰہِ

ह़ज़रते अह़मद सावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से **छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब** ह़ासिल होता है। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات)

﴾6﴿ कुर्बे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ کَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی لَہٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरमियान बिठा लिया। इस से सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को तअ़ज्जुब हुवा कि **येह कौन ज़ी मर्तबा है!!!** जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है। (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۱۲۰)

﴾7﴿ दुरूदे शफ़ाअ़त :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْہُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَکَ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ

शाफ़ेए़ उमम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये **मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है!!!**

(الترغیب والترہیب ج ۲ ص ۳۲۹، حدیث ۳۱)

हर रात इ़बादत में गुज़ारने का आसान नुस्ख़ा

ग़राइबुल कुरआन सफ़ह़ा 187 पर एक रिवायत नक़्ल की गई है कि जो शख़्स रात में येह दुआ़ 3 मरतबा पढ़ लेगा तो गोया उस ने शबे क़द्र को पा लिया। लिहाज़ा हर रात इस दुआ़ को पढ़ लेना चाहिये।

दुआ़ येह है :

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ الْحَلِیْمُ الْکَرِیْمُ، سُبْحٰنَ اللّٰہِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِیْم

(या'नी ख़ुदाए ह़लीम व करीम के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है जो सातों आस्मानों और अ़र्शे अ़ज़ीम का परवर दगार है) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. **1163-1164**)

www.dawateislami.net